

નિચ્ચતુલ મોમિન

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ



નિચ્ચતુલ મોમિન



-: મુઅલ્લિફ :-

ખલીફએ શૈખુલ ઇસ્લામ

હાજી ઇબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા

પ્રેસિડેન્ટ : મોહસિને આઝમ મિશન સેન્ટ્રલ કમેટી

અહમદાબાદ, M : 96 24 22 12 12

જુમ્લા હુકૂક બ હકકે મોહસિને આઝમ મિશન મહકૂઝ હેં.

કિતાબ : ગિય્યતુલ મોમિન (ગુજરાતી)

મુઅલ્લિફ : ખલીફએ શૈખુલ ઈસ્લામ

હાજી ઈબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા (અહમદાબાદ)

ટાઈપ-સેટીંગ : જનાબ તૌફીક અહમદ અશરફી (બખૌદા)

M : 9033168086, 7383761217

તા'દાદ : 11,000

કીમત : 25 /-Rs

સિને ઈશાઅત : સપ્ટેમ્બર-2020

નાશિર : મોહસિને આઝમ મિશન સેન્ટ્રલ કમિટી 2/B કીર્તિકુંજ

સોસાયટી શાહે આલમ ટોલનાકા અહમદાબાદ-380028

-: મિલને કા પતા :-

મક્તબએ શૈખુલ ઈસ્લામ, અલિફ કિરાના કે સામને,

રસૂલાબાદ, શાહે આલમ અહમદાબાદ-380028

ઔર મોહસિને આઝમ મિશન કી તમામ બ્રાન્ચેં

કોન્ટેક્ટ : 96 24 22 12 12

निश्चयतुल मोमिन

नम्बर शुमार	ईडरिस्त	सईडल नम्बर
1	अभिप्राय	4
2	उमेशा की जन्त या जडन्तम क्यूं ?	5
3	“निश्चयतुल मोमिनीन” डडरत शैभुल ईस्लाम की नडर में	6
4	जाना जाने की निश्चयत	8
5	ईल्मे दीन (डिताबे लिखने और छपवाने) की निश्चयतें	11
6	पैदल मस्जिद जाने वाला	15
7	जो नेकी का ईराद करे और न कर सके	17
8	सवाब का मिलना निश्चयतों पर हैं	19
डिक़ायत		
9	(1) सौ (100) ईन्सानों का क़तिल	20
10	(2) यरवाडे की निश्चयत, आटे का पडाण	22
11	(3) नदी ने रास्ता दे दिया	23
12	(4) मटके का बढबूदार पानी और बादशाह का ईन्आम	25
13	(5) डडरते मूसलम <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> और यरवाडा	29
14	(6) मस्जिद के दरवाजे पर झूटी	31
15	जो दूसरों का बुरा करना चाहे	32
16	दुन्या की मज्मत	36

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
نَحْمَدُكَ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِكَ الْكَرِیْمِ

અલ્લાહ કે રસૂલ صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈરશાદ ફરમાયા : “નિચ્ચતુલ મોમિન ખૈરુમ મિન અમલિહી” યા’ની મોમિન કી નિચ્ચત ઉસ કે અમલ સે બેહતર હૈ. ગોયા યેહ હદીસ ઈસ બાત કા એ’લાન કર રહી હૈ કે મઝહબે ઈસ્લામ જહાં એક તરફ ઈન્સાન કો અચ્છે કામોં કી તરફ બુલાતા હૈ ઓર નેક કામોં કો હમેશા કરતે રહને કા પૈગામ દેતા હૈ, વહીં દૂસરી તરફ વોહ બન્દોં કો ઈસ યીઝ પર ભી ઉભારતા હૈ કે વોહ ઈન કામોં કો નેક ઈરાદોં કે સાથ શુરૂઅ કરેં ઓર અચ્છી નિચ્ચત કે સાથ ઈસે અન્જામ તક પહુંચાએ. ઈસ નેક નિચ્ચત વ અચ્છે ઈરાદે કા સબ સે બાળા ફાએદા યેહ હૈ કે અગર કોઈ બન્દા નિચ્ચત કર લેને કે બા’દ ઉસ કામ કો શુરૂઅ ન કર સકા યા શુરૂઅ કર કે ઉસે પૂરા ન કર સકા તબ ભી અલ્લાહ રબ્બુલ ઈઝ્ઝત ઉસ બન્દે કો અપને ફઝ્લો કરમ સે ઉસ કી નેક નિચ્ચતી કે સબબ ભરપૂર અજો સવાબ અતા ફરમા દેતા હૈ.

ઈસ કિતાબ “નિચ્ચતુલ મોમિન” મેં મુઅલ્લિકે કિતાબ જનાબ હાજી ઈબ્રાહીમ સાહિબ અશરફી (ખલીફએ હુઝૂર શૈખુલ ઈસ્લામ વ પ્રેસીડેન્ટ મોહલ્લિસે આઝમ મિશન, ગુજરાત) ને બન્દોં કી નિચ્ચત કે તઅલ્લુક સે ગુજરાતી ઝબાન મેં એક ઉમ્દા ઓર મુફીદ બહસ કો પેશ કિયા હૈ. ઈસ કી તાલીફ મેં મુઅલ્લિક ને કુરઆને કરીમ કી આયાત, કુછ હદીસેં, બુઝુર્ગોં કે અકવાલ ઓર હિકાયાત કો નકલ કર કે મઝામીન કો પઢને વાલોં કે લિએ નફઅ બખ્શ બનાયા હૈ, સાથ હી હુઝૂર શૈખુલ ઈસ્લામ હઝરતે અલ્લામા મદની મિયાં સાહિબ અશરફી જીલાની કી તકરીરોં સે ભી કુછ બાતોં કો હૂ બહૂ નકલ કિયા હૈ.

મુઅલ્લિકે મૌસૂફ ઈસ સે પહલે ભી મુખ્તલિફ ઉન્વાન પર કુછ કિતાબોં કી તાલીફ ફરમા ચુકે હેં. વોહ દીની વ સમાજ ખિદમત કા બહુત શગફ રખતે હેં. બુઝુર્ગોં કી કિતાબોં સે ઉન કે પૈગામાત કો જમ્અ કર કે અપને મુર્શિદ કી દુઆઓ ઓર ઉલમા કી રહનુમાઈ કે સાથ મૌસૂફ અપની તાલીફાત કો અવામ કે સામને પેશ કર દેતે હૈ.

અલ્લાહ પાક જનાબ હાજી ઈબ્રાહીમ સાહિબ કી ઈન ખિદમાત કો કબૂલ ફરમાએ ઓર ઈન કે ઈલ્મો અમલ મેં બરકતેં અતા ફરમાએ. આમીન બિજાહિ સચ્ચિદિલ મુસલીન.

26-8-2020

સચ્ચિદ હસન અસ્કરી અશરફ અશરફી અલ જીલાની
સજજાદ નશીન આસ્તાનએ હુઝૂર મુહલ્લિસે આ’ઝમે હિન્દ વ
સજજાદા નશીન આસ્તાનએ હુઝૂર અમીરે મિલ્લત رحْمَتُما اللّٰهُ تَعَالَى

(1) हमेशा की जन्तत या जहन्नम क्यूं ?

येह लिखने वाला अक रोज उजरत शैखुल ईस्लाम की बारगाह में बैठा था के उजरत से अक सुवाल पूछ लिया. “उजरत हमारी जिन्दगी बहुत छोटी है और ईस छोटी सी जिन्दगी में से बयपन के अय्याम निकाल डाले के जिस में न शउर, न समज, न कुछ ईर्ज न वाजिब या’नी कोई ईबाहत होती ही नहीं. बयपन बस भेल कूद में गुजर जाता है. बाकी के सालों में टीनी व दुन्यवी ता’लीम और रोजी की झिंक, धंधा, नौकरी, भेतीबाडी, दुकानदारी या शादी बियाह में भीत जाता है और झिर जवानी में अकसर गइलत भी तारी रहती है. झिर जो थोणी बहुत ईबाहतें होती है तो उस में भी गइलत, शैतानी नईसानी वस्वसे, रियाकारी वगैरा शामिल रहती है, तो क्या येह ईबाहत हमें जन्तत में ले जायेगी ?

और काझिर ईस छोटी सी जिन्दगी में 30/40 साल या जियादा से जियादा 60/70 साल कुई करता हैं तो उस को हमेशा की जहन्नम क्यूं ? येह बात हमारी समज में नहीं आती.

उजरत ने इरमाया : सुनो ! न मुसलमान को जन्तत उस के आ’माल से मिलेगी और न काझिर को जहन्नम उस के आ’माल की वजह से मिलेगी, बल्के मुसलमान जन्तत में और काझिर जहन्नम में अपनी निश्चयत के बदले जायेगा.

मुसलमान अल्लाह तआला की वलदानियत को तस्लीम करता है और उस की ईबाहत करता रहता है और उस की निश्चयत येह होती है के मैं हमेशा जिन्दगी भर ईमान पर रहूंगा और कभी कुई न करूंगा, तो अल्लाह तआला के इज्जलो करम से येह निश्चयत उस को हमेशा की जन्तत का हकदार बना देगी अब ईस निश्चयत के साथ जितने जियादा आ’माले सावलिहा करेगा वोह उतने

बणे बणे मर्तबे पायेगा और येह अल्लाह का इज़्जल है कोई अमल का नतीजा नहीं.

ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

तर्जमा : येह अल्लाह का इज़्जल है वोह जिसे याहे अता करे और अल्लाह बणे इज़्जल वाला है. (सूरअे जुमुआ आयत नं, 4)

और वैसे काफ़िर जो ईमान व ईस्लाम का मुन्किर हैं और वोह कुफ़ का ईकरार करने वाला होता हैं और वोह हमेशा कुफ़ पर ही जमे रहने की निश्चयत रभता है और दूसरों को भी कुफ़ पर बुलाता है तो कुफ़ पर राज़ी रहना और हमेशा कुफ़ करते रहने की निश्चयत उसे हमेशा की जहन्नम के लाईक बना देती है और येह अल्लाह का अद्दल है कोई गुल्म नहीं है क्यूंके अल्लाह ईस बात से पाक है के वोह गुल्म करे बल्के येह ईन्साफ़ हैं. शुक्र करो के उस ने तुम्हें मोमिन बनाया.

(2) निश्चयतुल मोमिन

हज़रत शैबुल इस्लाम की तज़र में

येह तकरीर हज़रत शैबुल इस्लाम ने हैदराबाद (दककन) में की थी, उस पूरी तकरीर का अेक जुज़ छानिरे बिदमत है. हज़रत इरमाते हैं :

“हम तो माईल अ करम हैं कोई साईल ही नहीं
राह दिभलाअे किसे ? रहरवे मजिल ही नहीं”

देओ ! अेक काम करो, काम अेक करो, बहुत सारी निश्चयतें लगा लो ज़ियादा सवाब मिलेगा. जैसे आप ने किसी को अेक इपिया दिया ईस लिये दिया के येह मेरा अज़ीज़ है ईस लिये दे रहा हूं, फिर येह निश्चयत के येह गरीब है ईस लिये दे रहा हूं, फिर

येह निश्चयत के येह यतीम है ँस लिये दे रखा हूं, फिर येह के येह मेरा हमसाया है ँस लिये दे रखा हूं. तो आप ँस तरह जितनी निश्चयतें बढ़ाते जा रहे हैं ँतनी ही नेकियां बढ़ती जा रही हैं आप ने दिया तो सिर्फ़ अेक ही रुपिया है मगर निश्चयतें मुफ्तलिफ़् छोती जा रही है तो सवाब बढ़ते जा रहा है ँसी लिये कहा गया है के..

निश्चयतुल मोमिन बैरुम मिन अमलिही व निश्चयतुल काफ़िर शरुम मिन अमलिही.

या'नी : मोमिनीन की निश्चयत उस के अमल से बेहतर है और काफ़िर की निश्चयत उस के अमल से बहतर हैं.

बहुत बणे नाजूक मोण की तरफ़ मैं आप को ले कर आ गया हूं. अेक सुवाल का जवाब मैं आप को देता यलू, ज़े बार बार होता है के क्या येह ँन्साफ़ का तकाज़ा हैं अपने दिमाग से सोचो और आप ही बताओ के अेक आदमी जितनी गलती करे उस को उतनी ही सज़ा मिलनी चाहिये ना ! और आदमी जितना अमल करे उस को उतना ही सवाब मिलना चाहिये ना ! मगर आप देषते क्या हो ? अेक काफ़िर अगर अेक साल कुफ़ करे तब ली जहन्नम और पचास साल कुफ़ करे तब ली जहन्नम और अगर देठ सौ साल कुफ़ करे तब ली जहन्नम और फिर सब के सब हमेशा के लिये जहन्नम में !

और येह मोमिन साहिब अेक साल मोमिन रहे तब ली जन्नत ! पचास साल मोमिन रहे तब ली जन्नत ! और देठ सौ साल मोमिन रहे तब ली जन्नत ! और वोह ली हमेशा के लिये जन्नत !

होना तो येह चाहिये था के अेक साल अमल करने वाले को अेक साल जन्नत में रष कर कहीं ँधर उधर भेज देते मगर अैसा नहीं होता हमेशा के लिये जन्नत ! अब सुवाल येह पैदा होता है

के जब अमल करने वाले ने इतना बणा अमल नहीं किया तो इतना बणा बढला कैसे ? और जब गलती करने वाले ने इतनी बणी गलती नहीं की तो इतनी बणी सजा कैसे ?

याद रहे ! यह सजा या जजा जो है वोह किसी अमल का नतीजा नहीं है येह निश्चयत का नतीजा है मोमिन की येह निश्चयत के में हमेशा मोमिन रहूंगा येह हमेशा रहने की निश्चयत उसे हमेशा का जन्नती बना देती है और काफ़िर की हमेशा कुफ़ पर रहने की निश्चयत उसे हमेशा का जहन्नमी बना देती है. मा'लूम हुवा के निश्चयत का मुआमला ही अलग है.

(3) जाना जाने की निश्चयत

हजरत शैबुल इस्लाम के कलाम से ज़ाहिर हो गया के निश्चयत का मुआमला ही अलग है अक बन्दा हमारे साथ मस्जिद में अ'तिकाफ़ में बैठा था घर से जाना भरपूर आता था लेकिन वोह जाना बहुत कम जाया करता था और ज़ियादा जाना और अस्थल लज़ीज़ (Tasty) जाना औरो के लिये छोण देता था. जब उस से पूछा गया की इस में तेरी क्या निश्चयत है तो उस ने अक लम्बी यौणी तकरीर कर दी और समजाया.

(1) मैं लज़ीज़ जाना इस लिये छोण देता हूँ के वोह मेरे साथियों की गीजा बने में उन को झांछेदा पहुंचाओं की हमारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया के ज़ैरुन्नास मंथन इउन्नास तुम में बेहतर वोह है जो लोगों को झांछेदा पहुंचाये.

(2) और येह के उन लोगों का दिल जुश हो के मोमिनीन के दिल को जुश करना अल्लाह को राज़ी करना है और येह के में इस छुटे हुअे जाने को मेरी आभिरत का तौशा बनाओं के दुन्या में

तू जो भी छोड़ेगा वोह तुझे आभिरत में मिलेगा. हमें बताया गया के अल ऐशु ऐशुल आभिरह या'नी मजे तो बस आभिरत के मजे है.

(3) और येह की कम जाने से पेट खाली होने से नीन्द का गल्बा कम रहता है तो एबादतें जियादा हो सकती है.

(4) और येह के कम जाने से बार बार वोशरूम (Toilet) पाजाने जाने से बया रहता हूं तो एबादत जियादा होती है.

(5) और येह के मैं पेट की जरूरत से कम जाना इस लिये भी जाता हू के येह आदत अल्लाह पाक को पसन्द है. जैसा के रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया के अल्लाह जिस को पसन्द करता है उसे तीन (3) ने'मतें अता इरमाता है (1) कम जाना (2) कम बोलना और (3) कम सोना.

(6) और येह के जाना कम जाना और सादा जाना जाना येह सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सलाबअे किराम की सुन्नत है के सलाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कभी लज्जत के लिये जाना नहीं जाया और कभी दिभावे के लिये कपणे नहीं पहने उन की निश्चते येही होती थी के जिस्म की बका के लिये और एबादत की कुव्वत के लिये जाते थे और सित्र ढांकने के लिये और सर्दी या गर्मी से अपने को बयाने के लिये पहनते थे.

(7) और कम जाने वाला बीमार कम पणता है तो सिहतो तन्दुरुस्ती बनी रहे इस लिये कम जाता हूं.

(8) जाना कम जाना सुन्नते औलिया भी है जैसे सय्यिदुना द्वाउद ताई رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सूभी रोटी पानी में भीगो कर पा लिया करते थे या सतू झाक लिया करते थे और इरमाते थे के इस से जो वक्त बयता है उस में मैं सत्तर (70) तस्बीह जियादा पढ लेता हूं.

(9) ખાના કમ ખાના સાલિહીન કી સુન્નત હૈ: જૈસે કે સચ્ચિદુના હસન બસરી رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ईशाद ईरमाया : मोमिन तकल्लुफ़ से बरी है. या'नी मोमिन नपरे नहीं करता और आप ने येह भी ईरमाया के मोमिन को तो ईतनी गिजा काई है जितना बकरी के बख्ये को या'नी ऐक मुह्री धुडारे (Dry dates) और दौ घुंठ पानी.

(10) और येह भी के खाना कम खा कर और सादा खाना खा कर में अपने नफ़स और ख्वाहिशत को मारुंगा, ईस लिये के नफ़स के खिलाफ़ करना सवाब है और नफ़स को ख्वाहिशत से रोकने पर अल्लाह के बणे बणे वा'दे है.

(11) और येह के ज़ियादा खाना खाने से वज़न बढ़ जाता है लोग मज़ाक उठाते हैं कोई मोटा कहता है कोई पेटू कहता है ! येह मज़ाक उठाने वाले ખુદા के गुनहगार होते हैं में कम खा कर उन को गुनाह से बचाता हूं.

(12) में ईस लिये भी कम खाता हूं के भूको को भूल न जाऊं के बादशाहत के उमाने में भी सच्यिदुना युसूफ़ عَنَيْهِ السَّلَام कम खाया करते थे और अक्सर भूके रहते थे जब के उन के खजाने भरे हुए थे जब आप से अर्ज किया गया के “ईतने अजीम खजानों के मालिक होते हुए भी आप भूके रहते हो ? तो आप ने ईरमाया के येह ईस अन्देशे से के कहीं सैर हो जाऊं तो कहीं भूको को भूल न जाऊं.” سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ क्या पाकीजा अप्लाक हैं ! तो साबित हुवा के भूका रहना अल्लाह के नबी सच्यिदुना युसूफ़ عَنَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है.

(13) और येह ईस लिये के भूके पेट से ईबादत करने से “तवज्जोह ईलल्लाह” ज़ियादा होती है.

(14) और येह के खाना बिस्मिल्लाह पढ कर शुरू करना और खाने के बाद अल-हम्दु लिल्लाह कहना याहिये के ईस से खाने

के बा वुजूद रोजे का सवाब मिलता है और येह भी झाअेदा के जाने से पडले बिस्मिल्लाह कडने से शैतान जाने में शरीक नही हो सकता.

(15) और येह के जाना लाल दस्तरज्वान पर बैठ कर जाना याहिये के येह सुन्नत है और येह के जाना दाहिने हाथ (Right hand) से जाना याहिये और येह के जाते वक्त सर पर टोपी होनी याहिये और येह के जाने के बिय में पानी पी लेना याहिये क्यूंके हमे कडा गया के पेट का अेक तिहाई हिस्सा जाने से और अेक तिहाई हिस्सा पानी से और अेक तिहाई हिस्सा हवा से लरो.

(4) धल्मे हीन (किताबें लिखने और छपवाने) की निश्चयतें

जिस तरह सदका, भैरात करने वाले मुप्तलिफ़ निश्चयतें कर के ज़ियादा सवाब कमा सकते हैं और जिस तरह जाना जाने वाला भा कर भी सवाब कमा लेता है, इस तरह कई कई निश्चयतें हर अमल के साथ शामिल की जा सकती हैं और इसी तरह छोटे से अमल पर भी पडाण जितना सवाब आदमी कमा सकता हैं.

फ़िरिशतों पर हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर इज़ीलत एल्म की वज़ह से ही मिली और अल्लाह तआला ने अपने कुरआने पाक में हमें हुक्म दिया :

सूरअे नहल आयत नं. 43 में

فَأَسْأَلُوا أَهْلَ الدِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۗ

तर्जमा : एल्म वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते.

और इरमाया के

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ

तर्जमा : अल्लाह से उन के बन्दों में से सिर्फ़ वोही डरते है जो एल्म वाले हैं. (पारह 22 सूरअे फ़ातिर, आयत नं. 28)

और येह भी इरमाया के

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

तर्जमा : और समझाओ समझाना मुसलमानों को झांभेदा देता है. (पारा 27 सूअे जारियात आयत नं. 55)

तो येह है एल्म की इजीलत और एल्म का मकाम समझना डो तो देभो डरते भूसा عَلَيْهِ السَّلَام, डरते भिडर عَلَيْهِ السَّلَام के पास एल्म सिभने पडुंये.

अभ डाल येह है के आदमी दरसगाडों के लिये वक्त नही निकाल पाता है तो अभ सहीड एल्म डसिल करना सिई किताबों डी से डो सकता है और किताब लिभने और छपवाने, कम कीमत में बेयने इी तकसीम (Free distribution) करने में भी मुप्तलिइ निश्चयतें डो सकती है. जैसा के

(1) जिंके भुदा व जिंके रसूल व जिंके औलिया डोता रहे और रहमत भरसती रहे. जैसा के डरते सुइयान एभने उयैना رَحِمَ اللهُ تَعَالَى इरमाते है : “एन्ड जिंकरसाविडीन तनज्जलुल रहमा” या’नी जडं जडं साविडीन का जिंके डोता है वडं वडं रहमत भरसती है.

(2) एल्मे दीन इैले और तारीकियां दूर डो, जडालत दूर डो और पढने वाले के दिल मुनव्वर डो.

(3) लोग पढेंगे तो शायद किसी गुनडगार को तौबा की तौईक मिल जाअे और डम उस में जरीआ बने.

(4) नेक आ’माल की भरकतें जान कर लोग नेक बन जाअे और डम उस में जरीआ बने. जैसा के सरकारे दो आलम

رَأَى كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ! اَللّٰهُمَّ صَلِّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

એક આદમી ભી તેરે સમજાને સે રાહે રાસ્ત પર આ જાએ તો યેહ તેરી મગ્ફિરત કે લિયે કાફી હૈ.

(5) કૌમ કો ફાએદા પહુંચે કે હુઝૂર નબિયે કરીમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ફરમાયા : તુમ મેં બેહતર વોહ હૈ જો દૂસરોં કો ફાએદા પહુંચાએ.

(6) કિતાબેં તોહફતન દી જાએ કે તોહફા દેના સુન્નત હૈ. મોમિન કા દિલ ખુશ હોતા હૈ તો અલ્લાહ કરીમ ખુશ હોતા હૈ.

(7) લોગ બદ અકીદા ગુમરાહ ફિકે જેસે વહાબી, દેવબન્દી કાદિયાની, અહલે હદીસ વગૈરા કી ગુમરાહિયોં કો જાને ઓર ઉસ સે દૂર રહે કે મિશન કી જાનીબ સે છપને વાલી કિતાબેં અહલે સુન્નત કે અકીદો કે મુતાબિક હોતી હૈ તો લોગોં કો ગુમરાહિયોં સે બચાયા જા સકે.

(8) ઈસ કામ મેં જો ખર્ચ હો ઉસ માલ કા સવાબ ઓર ઈલ્મે દીન ફૈલાને કા ઓર લોગોં કો અલ્લાહ કી તરફ બુલાને કી સઈ (કોશિશ) કરને કા સવાબ અપને મહૂમીન કો ઓર હુઝૂર કી તમામ ઉમ્મત કો ઓર હઝરતે આદમ عَلَيْهِ السَّلَام સે લે કર કિયામત તક આને વાલે મોમિનીન કી રૂહ કો ઈસાલે સવાબ કર કે ઉન કી અરવાહ કો ખુશ કર સકે.

(9) અલ્લાહ તબારક વ તઆલા પારહ 28 સૂરએ તહરીમ આયત નં. 6 મેં ફરમાતા હૈ :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

તર્જમા : ઐ ઈમાન વાલો ! અપને આપ કો ઓર અપને ઘર વાલોં કો ઉસ આગ સે બચાઓ જિસ કા ઈન્ધન (Fuel) આદમી ઓર પથ્થર (મુર્તિયા) હૈ.

आदमी जुद पढे, एल्म हासिल करे, अपनी औलाद को सिखाये पढाये. एल्म होगा तो भौंके जुदा होगा और भौंके ही तक्वा है, तक्वा एन्सान को जन्नत में ले जायेगा. जहालत तारीकी (अन्धेरा) है और तारीकी गुमराही की तरफ़ ले जाती है और गुमराही जहन्नम में ले जाती है.

(10) किताबों की छपाई में हिस्सा ले कर आप मोहद्विसे आजम मिशन के साथ शामिल हो सकते हैं. “मिशन का मकसद कौम की भिदमत” मिशन मुप्तविफ़् ज़रायेअ से कौम की भिदमत करता है. जैसे मस्जिद, मद्रसे, ખानकाहे ता’मिर करना, गरीब यतीम बन्धियों की शादी करवाना, बेवाओ की मदद करना, टीफीन सर्विस के ज़रीअे त्बूको को खाना खिलाना, ता’लीम के लिये मद्रसे, स्कूल चलाना तो जब आप किताबों के ज़रीअे मिशन से जुण जाओगे तो सारे कारे खैर में आप डायरेक्ट या एन्डायरेक्ट हिस्सा लेने वाले बन जाओगे और सवाब के हकदार बन जाओगे.

(11) मिशन के साथ जुणने के लिये मिशन के फ़ाउन्डर और सरपरस्ते आ’ला की इहानी नज़र तुम पर रहेगी और उन की दुआअे तुम्हें मिलती रहेगी.

(12) एस तरह दीनो सुन्नियत की तब्लीग होगी और दीन फैलाना नबी और सहाबा और औलिया की सुन्नत है तो आप को सुन्नत पर अमल करने का भी सवाब मिलेगा.

(13) एमाम शाफ़ेई رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ इरमाते है के मेरे नजदीक एल्म का अेक मस्अला किसी को समज़ा देना येह अेक पहाण बराबर सोना खर्च करने से भी बेहतर है. और सब पर त्तारी बात येह है के जुद अद्लाह तआला एल्म फैलाने और लोगों को अद्लाह की

तरङ्ग बुलाने वाले की ता'रीफ़ करता है. जैसा के अल्लाह तआला इरमाता है :

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

तर्जमा : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो लोगों को अल्लाह की तरङ्ग बुलाओ, पुढ नेकी करे और येह कहे में मुसलमान हूं. (पारह 24 सूरे अहम अस्सजदा आयत नं. 33)

या'नी अल्लाह पाक के नज़दीक सब से अच्छी बात येह है के लोगों को अल्लाह की तरङ्ग बुलाओ.

तो ओ लोगो ! क्या येह कम हैं ? लोगों को अल्लाह की तरङ्ग बुलाने वाला क्रियामत के दीन नूर के पहाण पर होगा. तो लोगो ! मिशन से जुण जाओ और किताब, दर्स वगैरा के जरीअे से इल्म झैलाने में हमारी मदद करो.

(5) पैदल मस्जिद जाने वाला

अक नमाज़ी को हम ने देखा के उस के पास सुवारी के लिये स्कूटर (Two wheeler) छोते हुअे और घर के करीब मस्जिद छोते हुअे ली कभी पैदल कभी स्कूटर पर वोह दूर वाली मस्जिद में जाता था. उस को जब पूछा गया के वोह अैसा क्यूं करता है, इस में तेरी क्या निश्चयत है ? तो उस का जवाब :

(1) दूर वाली मस्जिद का जो इमाम है वोह ज़ियादा इल्म रखता है किराअत अच्छी करता है, नमाज़ के आ'द यन्द मिनिट रुक कर मस्जिद मसाइल समजाता है. येह हिसाब से मस्जिद में नमाज़ में दिल जमई (हुज़ूरे कल्बी) मुयस्सर आती है. जब के

(2) जो करीब वाली मस्जिद है वहां इमाम ट्रस्टी के हाथों मजबूर है कभी कभी वोह इमाम को हटा कर पुढ मुसल्ले पर भणा

હો જાતા હૈ, ઈમામ નૌકરી ચલી જાને કે ડર સે ચુપ રહતા હૈ ઓર વોહ નમાઝ નમાઝ નહીં રહ જાતી. એક કે ઈલાવા દૂસરે જો ટ્રસ્ટી હૈ વોહ યા તો ખુશામત ખોર હૈ યા ડરપોક હૈ એસી સૂરત મેં ક્યા મા'લૂમ વોહ મુસલ્લે પર કબ્જા કર લેવે યેહ સમઝ કર હમ હટ ગએ.

યેહ જાહિલ ટ્રસ્ટી કો ઈમામત કા ઈતના શૌક થા તો વોહ કહીં મદ્રસે મેં જા કર ઈમામત કા કોર્સ કર લેતા થોળી તા'લીમ લે લેતા તો ખાત અલગ થી મગર યહાં તો “નિમ હકીમ ખતરે જાન” વાલા મુઆમલા હૈ.

(3) ઓર જો થોળે દૂર વાલી મસ્જિદ હૈ વહાં અલ્લાહ કે વલી કા આસ્તાના ભી હૈ ફાતિહા ખ્વાની ભી હો જાતી હૈ ઓર રૂહાની સુકૂન ભી મિલતા હૈ.

(4) એક ફાએદા યેહ ભી હૈ કે મસ્જિદ ઘર સે જિતની દૂર હોતી હૈ ઉતને કદમ ઝિયાદા પળેંગે ઓર ઘર સે વુઝૂ કર કે પૈદલ મસ્જિદ કી તરફ જાને વાલે કો હર કદમ પર નેકિયાં મિલતી હૈં તો જિતને કદમ ઝિયાદા ઈતની નેકિયાં ઝિયાદા.

જૈસા કે મદીનએ મુનવ્વરા મેં બની સલમા મસ્જિદ કે દૂર મદીને કે કિનારે રહતે થે ઉન્હોં ને ચાહા કી મકાન બેચ કર મસ્જિદ શરીફ કે કરીબ (Shift) હો જાએ, તો હુઝૂર નબિયે કરીમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઉન કો એસા કરને સે મન્અ ફરમાયા ઓર કહા : પારહ 22 સૂરએ યાસીન આયત નં. 12 وَكُتِبَ مَا قَرَأْتُمْ
તર્જમા : હમ લિખ રહે હૈ જો ઉન્હોં ને આગે ભેજા.

યહાં આસાર સે મુરાદ વોહ કદમ હૈં જો નમાઝી મસ્જિદ કી તરફ ચલને મેં રખતા હૈ. હુઝૂર ને બની સલમા સે ફરમાયા કે તુમ મકાન તબ્દીલ ન કરો. તુમહારે કદમ લિખે જાતે હૈ, જિતની ઝિયાદા

दूर से आओगे, एतने ही कदम जियादा पणोंगे और उतना सवाब जियादा मिलेगा.

(5) आदमी जब अल्लाह तआला का जिक्र करता हुआ जमीन पर चलता है तो जमीन खुश होती है और वोह जमीन दूसरी जमीन पर झुप्र करती है और एतना ही नहीं मगर वोह जमीन क्रियामत के दिन अल्लाह के सामने गवाही देगी के तेरे कुलां बन्दे ने तुजे मेरे पर चलते वक्त याद किया था.

(6) और येह भी है के मस्जिद जाते वक्त रस्ते में कोई अन्धा मिलेगा तो रास्ता कोस कराउंगा, कोई मोहताज मिलेगा तो उस की मदद कइंगा, कोई आदिमे दीन मिलेगा तो उस की ता'जीम कइंगा, कोई मुसलमान मिलेगा तो सलाम कइंगा, कोई सलाम करेगा तो जवाब दूंगा, कोई बद अप्लाक मिलेगा और मुजे गाली देगा या दूसरी कोई तकलीफ देगा तो सब्र कइंगा, कोई जनाजा मिलेगा तो कन्हा दूंगा, कोई ना महरम औरत सामने आयेगी तो हया कइंगा, अपना दामन बया कर निकल जाउंगा.

(7) और येह भी निश्चयत की मस्जिद में कहीं कूणा करकट या मकणी के जाले वगैरा होंगे तो दूर कइंगा, कहीं पानी टपकता मिलेगा तो नल वगैरा बन्द कइंगा, मुसलमानों से मुलाकात कइंगा, मुसाफ़हा कइंगा.

(8) और येह के चल कर मस्जिद जाने में अेक झाअेदा येह है के चलने से सिलत बर करार रहती है, कसरत (Exercise) होती है.

(6) जो नेकी का धरादा करे, मगर न कर सके

अल्लाह तआला बन्दे की निश्चयत देभता है कोई बन्दा ખુलूस दिल से अगर नेकी का धरादा करे और उस को पूरा न कर सके तो वोह उस ताअत का पूरा पूरा सवाब पायेगा.

मक्कअे मुकर्रमा में जुन्दा बिन उमरतुल्लैस बहुत बूढे शप्स थे, जब छिजरत के बाब में आयत नाजिल हुई और आप ने सुनी तो उन्हीं ने कहा मैं कोई मुस्तस्ना (मजबूर) तो नहीं हूं मेरे पास कसीर माल है उस को खर्य कर के मैं मदीनअे मुनव्वरा पहुंच सकता हूं. जुदा की कसम ! अब यहां मक्के में अेक रात बी नहीं रहूंगा मुझे ले यलो.

युनाअ्ये, उन्हें जाट पर (यारपाई, पलंग, जाटला) पर सुला कर ले यले और मकामे तन्ईम येह वोह जगह है जहां मस्जिद आईशा है और मकामी लोग वहां से उमरह का अेहराम बान्धते है और मक्का से मदीना जानिब यन्द् मिल पर वाकेअ है वहां पहुंचे और आप का ईन्तिकाल हो गया. आषिरी वक्त में उन्हीं ने अपना दाहिना हाथ (Right hand) अपने ही बाअें हाथ (Left hand) पर रख कर कहां : अै अल्लाह ! येह तेरे और तेरे रसूल का हाथ है मैं ईस पर बैअत करता हूं. जिस पर तेरे रसूल ने बैअत की और इह परवाज कर गई.

येह खबर सुनते ही सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इरमाया : “अै काश ! वोह मदीने तक पहुंचे जाते तो उन का अजो सवाब कितना बढ जाता.”

और येह खबर सुनते ही मुनाफिक लोग और मक्के के मुशिरक बकने लगे के जिस मक्सद से निकले थे वोह उन्हें न मिला. ईस बात पर येह आयते करीमा नाजिल हुई.

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرْغَبًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۗ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ

بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ

तर्जमा : जो कोई अल्लाह की राह में घर बार छोड कर निकलेगा वोह जमीन में बहुत सारी गुन्जाईश पा लेगा और जो

कोई अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ हिजरत की निश्चयत से निकला और उसे मौत आ गई तो उस का सवाब अल्लाह के जिम्मे हो गया. (पारह 5 सूराअे निसा आयत नं. 100)

यहां बताया गया और कियामत तक के मुसलमानों को येह मुजदा (पुश पबरी) सुनाया गया के तुम्हारी निश्चयत अच्छी हो और अगर तुम अमल पूरा न कर सको तो भी पूरा सवाब पाओगे. जैसे हज, उमरह के लिये जाने वाला या मस्जिद की तरफ़ चलने वाला या कोई और नेक काम करने वाला किसी मजबूरी के सबब वोह काम पूरा न कर सका तो वोह पूरे पूरा अजो सवाब पा लेगा. बेशक ! अल्लाह पाक तुम्हारी निश्चयतें देखता है और वोह अता करने में बपील (कन्जूस) नहीं. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ

सवाब का मिलना निश्चयतों पर है

उज्जरते एब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने इरमाया के नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नमाज की सई अव्वल के इजाएल बयान इरमाअे तो सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ पडली सई में जगह हासिल करने में बहुत कोशां हुअे यहां तक के जिन के मकानात मस्जिद शरीफ़ से दूर थे वोह अपने मकानात बेय कर मस्जिद के करीब मकान खरीद ने लगे के सई अव्वल में जगह मिलने से मइउम न रहे. इस पर येह आयते करीमा नाजिल हुई और लोगों को तसल्ली दी गई के सवाब निश्चयतों पर हैं.

अल्लाह तआला अगलों को भी जानता है और जो लोग किसी उज्जर के सबब से पीछे रह गअे उन को भी जानता है और पीछे रह जाने वालों की और आगे पहुंचने वालों की सब की निश्चयत उसे मा'लूम है उस से कुछ भी छुपा नहीं. जैसा के अल्लाह तआला ने येह आयत नाजिल कर के इरमाया :

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ۝

तर्जमा : और बेशक ! हमें मा'लूम है जो तुम्हीं में से आगे
 बणे और बेशक ! हमें मा'लूम है तुम्हीं में से जो पीछे रहे.

(पारल 14 सूत्रे हिज आयत नं. 24)

जो लोग इताअत करने में और पैर जम्मा करने में आगे
 बढने वाले हैं और जो सुस्ती में पीछे रह जाने वाले है या'नी के जो
 लोग सुस्ती से पीछे रह गये वोह तो नुकसान में हैं मगर जो लोग
 सुस्ती से नहीं मगर किसी उज़र के सबब पीछे रह जाते है वोह
 नुकसान में नहीं है अगर किसी का मकान मस्जिद से दूर है और
 वोह घर से वुजू बना कर मस्जिद की तरफ़ जितने कदम चलेगा
 वोह उतना ज़ियादा सवाब पायेगा. سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ

हिक्कयात

(1) सौ (१००) इन्सानों का क़तिल

बनी इसराईल में अक़ बहूत ही बणा गुनहगार बन्दा
 था उस ने निनान्वे (99) इन्सानों का क़त्ल किया. अब उसे नदामत
 (शर्मिन्दगी, पछतावा) हुवा, सोया के मैं ने बहूत जुल्म किया येह
 सोय कर वोह अपने जमाने के अक़ आबिद के पास चला गया
 और पूछा के क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ? उस आबिद
 ने क़हा : तूने बहूत बणे गुनाह किये तेरे लिये मुआफ़ी की कोई
 सूरत नहीं है. अब उस ने सोया के जब मुआफ़ी है ही नहीं तो
 क्या निनान्वे और क्या सौ उस ने उस आबिद को ली मार डाला
 और 100 पूरे हुअे.

थोणे अर्से बा'द उस ने फिर सोया के मैं तो गया था तौबा
 करने और मैं ने तो गुनाह का और ओज बढा दिया. अब मुजे

सच्ची तौबा कर लेनी चाहिए. उस के पूछने पर जानने वालों में से किसी ने कहा के तू बैतुल मुकद्दस यला ज़ा वहां अल्लाह का अक़ मक़बूल बन्दह रहता है, वोह तुझे तौबा करा देगा और उस वली की दृआ से अल्लाह तआला तुझे ज़रूर मुआफ़ कर देगा, अब वोह तौबा की निश्चयत से दोबारा घर से निकला और वलीअल्लाह की बारगाह की तरफ़ मुतवज्जह हुवा.

अभी उस ने थोणा ही फ़ासिला तै किया था के उस पर मौत आ गई. युनान्चे, फ़िरिश्ते ने उस की इह कब्ज़ कर ली अब उस की मौत के बा'द अज़ाब के फ़िरिश्ते व रहमत के फ़िरिश्ते के बीच में बहस छिण गई के उस की इह किस के हवाले होनी चाहिए. रहमत के फ़िरिश्तों की दलील येह थी के वोह तौबा की निश्चयत से घर से यला था और अज़ाब के फ़िरिश्तों का कहना येह था के येह सौ (100) इन्सानों का कातिल है और अभी उस ने तौबा नहीं की.

अब येह फ़िरिश्ते बारगाहे इलाही كَلِمَاتِ की तरफ़ मुतवज्जह हुअे के आभिर येह ताईब है या ज़ालिम ? अल्लाह तबारक व तआला ने हुक्म दिया के ज़मीन की पैमाइश (Measurement) की जाऐ और देओ के वोह अगर अपने घर से करीब हैं तो अज़ाब के फ़िरिश्ते उस की इह ले जाऐ और अगर वोह मेरे औलिया के घर से करीब है तो रहमत के फ़िरिश्ते उस की इह को ले ले.

इस के बा'द अल्लाह तआला ने ज़मीन को हुक्म दिया के ऐ ज़मीन ! तू सिमट जा और मेरे बन्दे को तौबा के मक़ाम के करीब कर दे. क्यूंके वोह बणी उम्मीद ले कर अपने घर से यला था, वोह नदामत के आंसू बहा चुका था. उस की निश्चयत तौबा

की थी अगर्भे वोड पडुंय नहीं पाया मगर उस की नेक निश्चयत उस के काम आ गई.

सभक : बन्दा कभी अपने रज से मायूस, नाउम्मीद न हो के मायूसी कुर् है. बन्दा याहे कितना भी बणा गुनहगार क्यूं न हो सखी तौबा करे, अपने गुनाहों पर नादिम हो, आईन्दा गुनाह न करने की सखी निश्चयत करे. अल्लाह सारे गुनाह मुआफ़ कर देता है.

जैसा के पारह 24 सूरे अलुमर आयत नं. 53

قُلْ يُعَادَى الَّذِينَ اسْرَفُوا عَلَىٰ اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۗ اِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيْمُ ۝

तर्जमा : ऐ मडबूब ! तुम इरमाओ ऐ मेरे वोड बन्दो !

जिन्हों ने अपने नइसों पर गुल्म किया तुम अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो. बेशक ! अल्लाह सभ गुनाह मुआफ़ कर देता है और बेशक ! वोड बपशने वाला महेरबान है. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۝

(2) यरवाहे की निश्चयत, आटे का पहाण

अडादीसे मुबारका में है के लजूर नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने उम्मतियों को बताया के बनी ईसराईल की आबादी वाले अलाकों में सप्त अकाल (सुष्मा, कडूत) पणा और उस की वजह से गले की पैदावार कम हो गई और पानी की किल्लत पैदा हो गई ईन्सान और यौपाअे इस की वजह से मरने लगे.

ईसी अस्ना में अेक मुसलमान यरवाहा अपने मवेशियों को यराने के लिये जंगल में गया था, वहां बणी बणी पहाणियां थी उस की नजर अेक बहुत ही बुलन्द पहाण पर पणी तो वोड बोला के अगर येह पहाण आटे का होता और अगर मैं इस का मालिक

डोता तो उर येह सारा आटा में अल्लाह के बन्दों की बिदमत में अल्लाह की रिजा के लिये भर्य कर डालता और किसी भी इन्सान को लूक से भरने न देता.

उस दौर के पैगम्बर पर अल्लाह तआला ने फिरिश्ते के उरीअे वही भेज मेरे उस बन्दे को पुश भबरी सुना दो के उस की निथ्यत के बदले में उस के आ'माल नामे में पडाण बराबर आटा भर्य करने का सवाभ मैं ने लिभ दिया.

हजरत शैभुल इस्लाम ने वटवा शरीफ में हजरत कुल्बे आलम رحمة الله تعالى عليه के आस्ताने के करीब अेक तकरीर में इरमाया : कियामत के रोज बन्दे के नामअे आ'माल में अैसे अैसे आ'माल निकलेंगे जो उस ने दुन्या में अन्जाम नहीं दिये, वोह पुद तअज्जुब करेगा तो कडा ज़अेगा बन्दे ! येह तेरी निथ्यत थी के तू दुन्या में कडा करता था. काश ! मेरे पास दौलत डोती तो मैं मस्जिद ता'मीर करवाता. अै काश ! मेरे पास माल डोता तो मैं सदके देता हज करता.

और जो दुन्या में हराम कारिया करने वालों को देण कर येह कहते हैं के मेरे पास माल डोता तो मैं शराभ पीता या जूआ भेलता तो अब वोह निथ्यत की सजा पाअेगा.

(3) नदीने रास्ता दे दिया

येह वाकिआ हम ने हजरत शैभुल इस्लाम की उबान से गढणा में सुना जो निथ्यत के तअल्लुक से है. आप ने इरमाया के अेक शैभ ने अपने भादिमे भास को बुला कर इरमाया के येह टीङीन में भाना ले कर कुलां जंगल में यले ज़ओ वहां तुम्हें अेक दरवेश मिलेगा, उसे मेरा सलाम पहुंच्याओ और भाना पहुंच्याओ. भादिम ने जवाब दिया : हजरत ! वहां तक पहुंचना

दुश्वार है रास्ते में जो नदी पणती है उस में सैलाब (बाढ) है में कैसे जाँगी? आप कोई हल बता दे.

शैष ने कहा के नदी से कल देना के मैं अके जैसे दरवेश के पास से आया हूँ जो जिन्दगी में कभी अपनी बीवी के पास गया ही नहीं. मुरीद येह जानता था के शैष के चार इरजन्द है और येह कैसे हो सकता है के कोई बीवी को छूअे ली नहीं और बिगैर टच (Touch) किये भेटे पैदा हो जाअे, लेकिन अदब के हिसाब से वोह आमोश रहा और चल पणा.

जब वोह नदी के करीब हुवा तो उस ने वोह बात कल दी जो शैष ने बताई थी के अै नदी ! मैं अके जैसे दरवेश के पास से आया हूँ जो जिन्दगी में कभी अपनी बीवी के पास नहीं गया, नदी ने रास्ता दे दिया और वोह आराम से जंगल में दूसरे दरवेश के पास पहुँच गया.

वोह दरवेश ने फादिम के सामने पाना पाया और भरतन मुरीद को लौटाअे. अब उस ने कहा के हजरत ! अके नुस्खा मिला था तो नदी ने रास्ता तो दे दिया मगर अब मैं वापस किस तरह जाँगीगा ? दरवेश ने कहा के तू नदी से कल देना. मैं अके जैसे दरवेश के पास से आया हूँ जिस ने जिन्दगी में कभी पाने का अके लुकमा नहीं पाया. अब फादिम सोचने लगा के इन्हों ने तो मेरे सामने पूरी प्लेट साइ कर दी और येह कलते है जिन्दगी में कभी पाना नहीं पाया मगर यहाँ ली अदब का लिहाज रप कर वोह आमोश रहा, नदी ने रास्ता दे दिया, वोह वापस आ गया.

जब शैष ने जैरियत तलब की तब फादिम ने अर्ज की, के हुजूर ! काम तो हो गया मगर दिल में दगदगा पैदा हो गया, न आप की बात समझ में आई, न वोह दरवेश की, आप اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ

साहिबे औलाद हो और वोह दरवेश ने तो मेरे सामने जाना
जाया अब येह क्या राज है ? जो मैं न समझ सका !

हजरत ने इरमाया : हमारा बीवी के पास जाना या कुर्बत
करना येह प्वाहिशे नफ्सानी का नतीजा नहीं है मगर बीवी का
हक अदा करना येह सुन्नते रसूल है. तो हम उस का हक अदा
करने के लिये अगर कुर्बत करते हैं तो प्वाहिशे नफ्सानी नहीं है
मगर इबादते इलाही है.

और उस बुजुर्ग का जाना जाना तो वोह लज्जते नफ्स के
लिये नहीं जाते मगर जिन्दगी में जिस्म की बका के लिये और
कुव्वते इबादते इलाही के लिये जाते हैं तो उन का जाना जाना
इबादते इलाही है, तो उन को येह कहने का हक है के उन्हों ने
(नफ्स के लिये) कभी जाना नहीं जाया.

देखा अच्छी निश्चयतें आदमी को कहां से कहां पहुंचा देती
हैं के नदी, दरिया भी उस का हुक्म मानते हैं यहां तक शेर और
दूसरे जंगल के जानवर भी दरवेशों का हुक्म मानते हैं और दुन्यादार
का हुक्म उस के घर वाले भी नहीं मानते, तो येह है निश्चयतों की
बरकतें. سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ

(4) मटके का बदनूदार पाली और

बादशाह का धन्याम

येह हिकायत हम ने मौलाना इम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की किताब
हिकायते इमी से युनी है बहुत पुरानी सखी कहानी है जब के
हुकमरान नेक हुवा करते थे आज की तरह आदिम जाबिर और
कौम के गदार नहीं हुवा करते थे.

अेक अरब देहात (Village) में काश्तकारी कर के बणी मुश्कले
उठा के गुजर बसर करता था, उस की बीवी हमेशा उस से लपती

जगणती और कोसती रहती के तुम्हारी जिन्दगी बेकार बीत रही है, तुम अेक दम निकम्मे हो तुम नाकाम हो तुम ने न हम को न बच्चों को कभी सुख दिया. वगैरा वगैरा....

वोह कहता के न मैं कोई हुनर जानता हूं न मेरे पास कोई वसाईल है न जेती बाडी में कोई ईतनी पैदावार है अस मैं तवक्कुल करता हूं. बीवी ने जवाब दिया के अपनी कालिली और सुस्ती को तवक्कुल का नाम दे कर भुदा पर ईल्लाम न रणो. कुछ करो...

अेक मरतबा भीयां बीवी दोनों ने मिल कर सोचा के बादशाह सलामत से कुछ मदद मांगी जाअे वोह जणा रहम दिल् है और अपनी रियाया पर महेरबान है (मोदी जैसा नहीं है) लेकिन फिर मर्द बोला की बादशाह के दरबार में जाने के लिये मेरे पास अेक अच्छा लिबास भी नहीं है न मेरे पास सुवारी के लिये कोई घोणा या दूसरा जानवर सिवाय अेक मरीयल गधा जो मिरले लाश है (बहुत कमजोर और बीमार) और बादशाह का दरबार (State Capital) बहुत दूर है, लम्बा सफ़र है और येह के जब रियाया बादशाह के पास जाती है तो कुछ तोहफ़े तडाईफ़ ले कर जाती है, यहां तो येह भी कुछ नहीं है कोई मा'भूली यीज़ भी नहीं है और आभिरि बात तो येह है के जैसे अल्लाह तबारक व तआला से कुछ अर्ज़ करने से पहले बन्दे उस की हम्दो सना करते है कुछ ईबादत करते है बा'द में दुआ मांगते है. अैसे ही बादशाहों के दरबार में जाने वाले उस के कसीदे पढते है, ता'रीफ़ करते है जब के मुजे तो बोलने का भी सलीका नहीं मैं वहां कैसे जाऊं ?

बात तो उस की सय थी न अच्छे कपणे, न सुवारी, न कोई तोहफ़ा, न भुद में कोई क्माल और जणी दूर का मुआमला मगर ईस के सिवा कोई यारा भी न था. आभिर बीवी ने भश्वरा

दिया के मेरे पास बारिश के साँझ शरूँपाँ पानी से त्तरा हुवा अेक मटका है हमारे गांव की आबो हुवा बणी पुश गवार है. पानी बणा मीठा है हमारे यहाँ की पहाणियों की हुवा पुश गवार पानी जैसा पानी शहर वालों को कहां मुयस्सर आता है मैं तुम्हें येह पानी का मटका देती हूँ तुम उसे ले कर जाओ और बादशाह की बारगाह में नज़र करो वोह बणा ही नुक्ता नवाज़ है वोह ज़रूर पुश डोगा और तुम्हें ज़रूर कुँछ न कुँछ अता करेगा.

वोह किसान तय्यार हो गया बीवी ने मटके का मुँह बन्द कर के ठीपर कपणा ढांक दिया कई दिनों का सँकर तै कर के वोह दारुल सल्तनत (Capital) पहुँचा.

सहरा (Desert) की सँकर थी दिन त्तर तेज धूप में पानी गर्म हो जाओ और उस के बुजारात (Hot breeze) मटके का मुँह बन्द होने की वजह से बहार न निकल सके और रात में ठन्ड में पानी मिसले बरफ बन जाओ अब वोह पानी बिगण कर बढबूदार हो गया.

आबिर वोह दरबार तक पहुँच ही गया बणी मिन्नतो समाजत के बा'द हाज़िरी का मौकअ मुयस्सर आया. बादशाह समज़ गया येह बियारा बणी उम्मीदे ले कर आया है, किसान ने मटका पेश किया, बादशाह ने जादिम के हाथ उसे अलग रखा दिया और उस ने किसान से कहा : तू बणा थक कर आया है, अेक दिन आराम कर अपनी थकान दूर कर और तू कल मेरे पास आना बादशाह ने जादिम से कहा : एँसे शाही मेहमान खाने (Guest room) में ठहराओ, एँसे पहनने के लिये कपणे दो और एँसे खाना खिलाओ और एँसे कल मेरे पास लाना.

जब मटका ढोला गया तो पानी बिगल युका था मटके से बढभू आ रही थी उसे डेंकवा दिया और षाढिभों से कडा के उसे ढबनर न डोने पाअे के उस के डदिये का डशर कया डुवा है ! नडी तो उस का दल टूट जाअेगा.

दूसरे दिन बादशाह ने डुकुम दिया के उसे शहर और जंगल की सैर कराअे जब वोड शहर और जंगल और बागात और यशुओ (जरने) की सैर को गया, तो वोड सडड गया के यडं तो डल, डुट, अनाज की डिरावानी है दरियाअे बड रहे है ँन ने'डतों के सामने डेरे मटके का पानी तो कुण हैसियत नडी रडता, तो अडने तोडके पर वोड डुद शरुडिन्दा डुवा.

जब वोड अडने घर के लिये निकला तो बादशाह ने अडने वजीर से कडा : डड ने उस के तोडके को नडीं देडा डड उस की निश्चयत देडते है वोड अडनी हैसियत के डिसाब से अडनी डेडतर से डेडतर यीज लाया, वोड डडे डुश करने को आया और डड से बणी उडुडीदे ले कर आया डड अडनी शान से उसे अता करेंगे. डड उस का अडल नडीं उस की निश्चयत देडेंगे.

जाते वक्त बादशाह ने उसे उडुदा सुवारी (घोणा) अता डरमाया उस के अडलो अयाल के लिये कडणे और कुण नकडी (Cash) अता डरमाई वोड डुशी डुशी अडने घर डडुंया और उस ने अडनी डीवी से कडा के डें जो तोडका बादशाह की डिदडत डें ले कर गया था दूसरा कोई डोता तो डेरे डुड पर डार देता और डुजे ँन्आड की जगड पर डेरी गदन डार देता. येड जो तोडके डें उस की बारगाड से लाया डूं येड सिई उस का डुल है के करीड डडेशा नवाजता डी है.

सबक : इस हिकायत में हमारे लिये ये सबक है के हम जो ताअत बजा लाते है और जिस एबादत पर हम पुश होते है इफ्र करते है उस की कोई वुक्अत ही नहीं है.

अेक तो अल्लाह रब्बुल एज्जत की बारगाह में एबादत करने वालों की कमी नहीं है और वोह बे परवाह है उसे हमारी एबादत की ज़रत नहीं है और हमारी एबादते बी किसान के मटके के बढबूदार पानी जैसी है जो हमारे मुंड पर मार देने के लाईक है. मगर वोह करीम रब हमारी पर्दा दरी करता है हमारा भरम रब लेता है और करम करता है हमें नवाजता है अगर वोह अद्ल करे तो हम कहीं के न रहे.

लिहाजा बन्दे को याहिये के अपने गुनाहों और गलतियों, ખामियों को याद रभे, शर्मिन्दा रहे, तौबा करते रहे और उस की बेपायां ने'मतों का शुक्र करते रहे.

(5) हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और यरवाहा

हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अेक यरवाहे को देखा के जो कल रहा है. औ करीम पुदा ! तू कहां है? तू अता के मैं तेरा नौकर बनू, तेरे जूते का तस्मा कस दूं, तेरे बालों में कंधी कड़ूं, तेरे कपणे बना दूं और गाज बटन लगा दूं, तेरे कपणो से धूल मिट्टी दूर कर दूं, जू, कीणे साफ़ कड़ूं, तेरी बारगाह में तेरे लिये दूध लाऊं, अगर तू बीमार हो तो तेरी गम ज्वारी (बीमार पुर्सी, एयादत) कड़ूं, तेरा प्यारा प्यारा हाथ यूमूं, तेरे नाजूक पैर दबाऊं, तेरा बिस्तर साफ़ कड़ूं, मैं दूध और घी ले कर तेरे दरवाजे पर आऊं, पनीर, रोगन, रोटीयां दही की टीकीया लाऊं, मेरी प्यारी बकरियां तुज पर कुरबान हो, यरवाहा इस तरह की भातें कर रहा था.

जब सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عليه السلام ने येह सब बातें सुनी तो पूछा के तू किस के साथ बातें कर रहा था? यरवाहे ने कहा : उस के साथ बात कर रहा हूं, जिस ने मुझे और तमाम काअेनात को पैदा किया, जो इस काअेनात का रब है. आप ने फरमाया : वोह तमाम चीजों से बे नियाज है, येह चीजें तो इन्सान की जरूरत है. वोह इस से बुलन्दो वाला है. तूने गुस्ताफी की है, फौरन येह सब छोड़ दे और तौबा कर, वोह यरवाहा अपनी हरकत पर शर्मिन्दा व अफ़सोस करने लगा.

अल्लाह तबारक व तआला ने उरते मूसा عليه السلام को वही के जरीअे आगाह किया के तेरा काम बन्दों को फुदा से मिलवाना है न के बन्दे को फुदा से जुदा करना? हर इन्सान की समज और इल्म और तबीअत के मुताबिक इस्लाह करनी चाहिये. उस की अकल, समज बूझ उस की गुफ्तगू है जो गुफ्तगू वोह करता है, उस के लिये बेहतर है. अल्लाह तबारक व तआला तो दिल् के इप्लास को देखता है, अल्फ़ाज को नहीं.

उरते मूसा عليه السلام से फरमाया गया के वोह यरवाहे को राजी करे. आप उसे तलाश करने निकले बहुत तलाश करने के बाद बिल आबिर फिर मुलाकात हो ही गई. आप ने उसे बताया के मुबारक ! तेरे हक में इज्जत मिल गई है के तू जिस तरह चाहे अल्लाह तआला को याद किया करे.

उस ने जवाब दिया : अब क्या मैं उस मन्ज़िल से आगे निकल गया हूं. आप ने याबूक मार कर मेरे घोणे का रास्ता बदल दिया, उस ने छलांग लगा कर आस्मान से बाहर निकल गया.

सभक : अल्लाह तआला के यहां जाहिरी अमल से बेहतर दिल् का इप्लास ज़ियादा जरूरी है, मुंह से अदा होने वाले अल्फ़ाज

સે ઝિયાદા ઝરૂરી દિલ કી કેફિયત હૈ, અલ ગરઝ વોહ ચરવાહા જો કુછ કહ રહા થા વોહ કિસી ઇલ્મ યા કિસી મુશિદ કી રહનુમાઈ બિગૈર કહ રહા થા. લેકિન જબ હઝરતે મૂસા عَلَيْهِ السَّلَام ને ઉસે આગાહ કિયા ઓર રહનુમાઈ મિલ ગઈ, તો ઉસે બિલ્કુલ સહીહ રાસ્તા મિલ ગયા.

ઔર લોગોં કો ઇલ્મે દીન કે બારે મેં સમઝાને કે લિયે અલ્લાહ તબારક વ તઆલા ફરમાતા હૈ : પારહ 14 સૂરએ નહલ આયત નં. 125

أُدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ط

તર્જમા : અપને રબ કી રાહ કી તરફ બુલાઓ પકકી તદબીર ઓર અચ્છી નસીહત સે ઓર ઉન સે ઇસ તરીકે પર બહસ કરો જો સબ સે બેહતર હો. ઔર ફરમાતા હૈ :

પારા 27 સૂરએ ઝારિયાત આયત નં. 55

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ©

તર્જમા : ઔર સમઝાઓ સમઝાના મુસલમાનોં કો ફાએદા દેતા હૈ.

(6) મસ્જિદ કે દરવાઝે પર ખૂંટી (Peg)

એક મુસાફિર ઘોળે પર સુવાર કહી જા રહા થા રાસ્તે કે કિનારે મસ્જિદ થી, નમાઝ કા વક્ત થા, સોચા કે ઘોળે કો બાન્ધ કર નમાઝ અદા કરૂં, મગર કહીં કોઈ ખૂંટી નઝર ન આઈ, ઘોળે કો યૂંહી છોળ કર નમાઝ અદા કર લી, નમાઝ સે ફારિગ હોને કે બા'દ કહી સે એક લકળી લા કર મસ્જિદ કે દરવાઝે પર ગાળ દી કે મેરે જૈસા કોઈ દૂસરા મુસાફિર કભી આએ તો વોહ ઇસ તકલીફ સે બચ જાએ. થોળી દેર બા'દ એક નાબીના શખ્સ વહાં સે ગુઝરા

और उसी भंत्मे से पैर टकराया वोह गिर गया, बोला किस बे वुकूफ़ ने यहाँ भंत्मा गाणा है, मैं गिरा कोई दूसरा न गिरे येह सोय कर भंत्मा उभाण कर ईंक दिया, अब बात येह लुई के अक ने भंत्मा लगाया, दूसरे ने उभाण ईंका दोनों की निश्चयत सहीह थी ईस लिये दोनों सवाब के लकदार बने.

जो दूसरों का बुरा याहे

कुरआने करीम पारह 22 सूरे अइतिर आयत नं. 43 में है के

اُسْتِكْبَارًا فِي الْاَرْضِ وَمَكْرُ السَّيِّئِ ط وَلَا يَحِقُّ الْمَكْرُ السَّيِّئِ اِلَّا بِاَهْلِهِ ط

तर्जमा : अपनी ज़ान को ज़मीन में उँया भियना और बुरे दाँव यलाना और बुरे दाँव अपने यलाने वालों पर ही पणता है.

या'नी जैसा करोगे वैसा लरोगे या जैसी निश्चयत वैसी भरकत, या जो गढा षोदता है वोही गिरता है तो आदमी को याहिये की निश्चयत अश्ली रभे और दूसरों का बुरा न करे, न सोये, नहीं तो करने वाला ही गिरेगा.

सूरे अइतिर आयत नं. 10

وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ط

तर्जमा : वोह जो बुरे दाँव करते हैं उन के लिये सप्त अज़ाब हैं और उन्हीं का मक़ भरबाद होगा.

जो दुनिया याहे

दुआ येह गया के अवाम में से अल्लाह का षौफ़ निकल गया है और लोगों में से अकसर ने दुनिया ही को सब कुछ समज लिया है और उन की निश्चयतें बस माल कमाना, माल जम्मा करना और बर्र्यों को सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम और मोडर्न जिन्दगी की रग़बत दिलाणा ही रह गया है और उलमाओने भी लोगों को

भुदा का भौङ्क दिलांना बन्द कर दिया है शायद येह उरते है के हम अगर सय बोलेंगे तो हमारे तोहङ्के, नजराने बन्द हो जाओगे ऐसी सूरत में निय्यतों ही के साथ दुन्या ही की निय्यत रबने वालों का जिक्र किया जाओ येह समज कर निय्यतुल मोमिन में साथ साथ दुन्या का भी जिक्र करना हम ने मुनासिब समजा.

अल्लाह तबारक व तआला ने अपने पाकीजा कलाम में जगह जगह पर दुन्या की बुराई बयान इरमाई और जो लोगों की निय्यत सिर्फ दुन्या पाने की है उन की मजम्मत इरमाई है :
जैसा के

पारह 2 अल बकरह आयत नं 199 में

فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

तर्जमा : कोई आदमी यूं कहता है औ हमारे रब ! हमें दुन्या में दे दे और आभिरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं और कोई यूं कहता है के औ हमारे रब ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आभिरत में भलाई दे और हमें अजाबे दोजभ से बचा ले.

और अल्लाह तआला कुरआने करीम पारह 25 सूरअे शूरा आयत नं. 20 में इरमाता है के

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ نَّصِيبٍ ۝

तर्जमा : जो आभिरत की भेती याहे हम उस के लिये उस के हक में आभिरत की भेती बढाओ और जो दुन्या की भेती याहे

हम उसे उस में से (थोड़ा) कुछ देंगे और आभिरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने करीम पारह 5 सूरे अ निसा आयात नं. 134 में फरमाता है के

مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝

तर्जमा : जो दुनिया का ईन्आम चाहे तो अल्लाह ही के पास हैं दुनिया और आभिरत दोनों का ईन्आम और अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है.

या'नी जिस को अपने आ'माल से दुनिया ही मकसूद हो तो वोह सवाबे आभिरत से महइम हो जाता है और जिस ने रिआअे ठलाही के लिये सवाबे आभिरत के लिये अमल किये तो अल्लाह उस बन्दे को दुनिया व आभिरत दोनों में सवाब देने वाला है. इस सूरेत में अल्लाह तआला से दुनिया ही चाहने वाला नादान, भसीस और कम हिम्मत है जो आ'माले सालिहा के बदले दुनिया या'नी वाह वाही, मालदारी या ने'मतें याहता है वोह आरिजी (Temporary) और झानी (जल्दी भत्म हो जाने वाली) चीज के तालिब है. आदमी को याहिये के अपने लिये उपरवी अज की निश्चयत करे और दुन्यवी जइरतें के लिये ब कदरे जइरत पर किफायत करे.

अल्लाह तआला पारह 12 सूरे अ हूद आयात नं. 15-16 में फरमाता है :

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنَّتْهَا نُوفٌ إِلَيْهِمْ أَعْمَاهُمْ فِيهَا
وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْجَسُونَ ۝ أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا
النَّارُ ۗ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

तर्जमा : वोह जो दुन्या की जिन्दगी और उस की जीनत याहे हम उस को उस का पूरा फल देंगे और उस में कमी न करेंगे, येह वोह लोग है जिन के लिये आभिरत में सिर्फ आग है और बरबाद हो गये और नेस्तो नाबूद हो गये उन के आ'माल जो वोह करते थे.

जो दुन्यवी जिन्दगी और उस की ने'मतों के तलबगार हैं अगर वोह दुन्या में कोई ब जाहिर नेक आ'माल करते हैं जैसे रिशतेदारों के साथ सिलखे रहमी, मोहताजों को कुछ देना परेशान डाल लोगों की धम्दाह करना वगैरा तो अल्लाह तआला उन के आ'माल का बहला दुन्या ही में दे देता है. जैसे कसरते औलाद, या कसीर माल या सिलहो तन्दुरुस्ती वगैरा और वोह उभरवी ने'मतों से महजूम कर दिया जाता है.

और फरमाता है : पारह 15 सूरे अे बनी इसराईल आयत नं. 19 में के

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ
جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلُهَا مَذْمُومًا مَدْحُورًا ۝ وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ
وَسَعَىٰ لَهَا سَعِيًّا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعِيَّهُمْ مَشْكُورًا ۝

तर्जमा : और जो लोग येह जल्दी वाली याहे हम उस में से उसे जल्दी दे दे फिर उस के लिये जहन्नम कर दे के उस में जाये मज्मत किया हुवा धक्के पाता और जो आभिरत याहे और उस के लिये कोशिश करे और अगर वोह हो धिमान वाला तो उस की मेहनत काम आये.

या'नी जो दुन्या का तलबगार हो तो येह ज़रूरी नहीं के उस की हर ज्वाहिश पूरी हो और वोह जो मांगे वोह सब उसे

દિયા જાએ બલ્કે ઉસ મેં સે ખુદા જિસે યાહે જિતના યાહે ઔર જબ યાહે દેતા હૈ ઔર કભી ઐસા ભી હોતા હૈ કે બિલ્કુલ મહરૂમ કર દિયા જાતા હૈ કભી ઐસા હોતા હૈ કે બહુત યાહતા હૈ મગર થોળા દેતા હૈ કભી ઐસા હોતા હૈ કે ઐશ યાહતા હૈ મગર તક્લીફ દી જાતી હૈ કભી ઐસા હોતા હૈ કે માલ હોતા હૈ મગર દૂસરોં કા યા દુશ્મનોં કા કબ્જા હો જાતા હૈ કભી ઐસી બીમારી દે દેતા હે કે તળપ તળપ કર મરતા હૈ ઔર અગર માન લો કે દુન્યા બહુત મિલ ગઈ તો ભી ક્યા ફાએદા ક્યૂંકે આખિરત કા તો નુક્સાન હો હી ગયા યેહ કિતની બળી બદ નસીબી હૈ ઉસ કે લિયે જો દુન્યા યાહે.

ઈસ કે બરઅક્સ મોમિન બન્દા જો આખિરત યાહતા હેં અગર ઉસ કો દુન્યા મેં ભી ઐશો રાહત મિલ ગઈ તો વોહ દોનોં જહાં મેં કામિયાબ હૈ ઔર અગર દુન્યા મેં રાહત ન મિલી ઔર તક્લીફ ઉઠાઈ તો ભી ક્યા નુક્સાન ? ક્યૂંકે આખિરત કી કભી ખત્મ ન હોને વાલી ને'મત ઉસ કે લિયે હૈ.

દુન્યા કા ધોકા (ફરેબ) હૈ

અલ્લાહ તબારક વ તઆલા ને અપને પાકીઝા કલામ ફુરઆને કરીમ પારહ 4 સૂરએ આલે ઈમરાન આયાત નં. 185 મેં ફરમાયા કે

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۝

તર્જમા : દુન્યા કી ઝિન્દગી તો બસ (સિફ) ધોકે કા માલ હૈ.

દુન્યા કી હકીકત ઈસ મુબારક જુમ્લે ને બે નકાબ કર કે રખ દી આદમી પૂરી ઝિન્દગી ઈસ કો હાસિલ કરને મેં લગા રહતા હૈ ઔર ફુરસત કો ગફલત મેં ગંવા દેતા હૈ જબ મૌત આતી હૈ તો પતા ચલતા હૈ કે જિસ ફાની કે લિયે મેં ને હમેશા બાકી રહને વાલી

उपरवी जिन्दगी का कितना नुकसान किया के हकीकी जिन्दगी तो वोही है जैसा के हजरत शैबुल ईस्लाम इरमाते है :

“हकीकी जिन्दगी का आगाज होता है मद्इन से” या’नी हकीकी जिन्दगी की शुरुआत मरने के बा’द ही शुरुअ होती है बन्दे मोमिन दुन्या की अजिब्यतों पर सभ्र करता है वोह आभिरत में बणी बणी ने’मते पाओगा. سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ जैसा के ईस की अगली आयत में इरमाया गया के बेशक ! जइर तुम्हारी आजमाईश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में और मुश्किलों से बहुत बुरा भला सुनोगे और अगर तुम (दुन्या में) सभ्र करोगे तो येह बणी हिम्मत का काम है और उस पर अज्ज पाओगे.

हमारे नबी ने कल्मी दुन्या पसन्द न इरमाई. हदीस शरीफ में है के हजरते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हुजूर नबिये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के घर पर तशरीफ लाओ तो आप ने देखा की दो जहां के सरदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ओक बोरिये पर आराम इरमां है और ओक यमणे का तकिया जिस में नारियेल के रेशे तरे हुओ है और जिसमे अकदस पर बोरिये के निशान पणे हुओ है. येह देख कर झड़के आ’जम रो पणे. सरकारे दो आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने रौने की वजह जानना याही तो अर्ज किया : “या रसूलव्लाह ! कैसरो किसरा तो अैशो राहत में हो और आप रसूले भुदा हो कर ईस हाल में ! तो हुजूर नबिये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “ओ उमर ! क्या तुम्हें येह पसन्द नही के उन के लिये दुन्या हो और हमारे लिये आभिरत !

दुन्या की जिन्दगी छोडके का माल

अव्लाह तबारक व तआला सूरओ हदीद आयत नं. 20 में इरमाता है :

اعلموا انما الحيوۃ الدنیا لعب ولهو وزینة وتفاخر بینکم وتکاثر فی
الأموال والأولاد

तर्जमा : ज्ञान लो के दुन्या की जिन्दगी सिवाअे भेल तमाशो के और कुछ नही है और आराधश और तुम्हारा अेक दूसरों पर भणाई मारना और माल और औलाद में अेक दूसरे पर जियादती याहना.

और इरमाता है :

وما الحيوۃ الدنیا الا متاع العرور

तर्जमा : और दुन्या की जिन्दगी इकत धोके का माल के सिवा और कुछ नही.

येह उन लोगों के लिये है जो सिर्फ दुन्या ही का हो कर रह जाअे और उसी पर लरोसा कर ले और आभिरत की इक न करे मगर जो शप्स दुन्या में रह कर आभिरत का तालिब हो और अस्बाबे दुन्या से भी आभिरत ही के लिये धलाका रभे उस के लिये दुन्या धोके का माल नही है मगर उस के लिये दुन्या की कामियाबी आभिरत का जरीआ है मताअे सुइर है.

उजरते जुन्नून मिसरी رضى الله تعالى عنه ने इरमाया : “अै गिरौहे मुरीदीन ! दुन्या तलब न करो और अगर तलब करो तो उस से महब्बत न करो.

तौशा यहाँ से लो आराम गाह और है.

काइर दुन्या याहता है

अल्लाह तबारक व तआला कुरआने करीम पारह 2 सूअे अल बकरह आयत नं. 212 में इरमाता है के

رُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ

اتَّقُوا فَوَقَّعَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

तर्जमा : काफ़िरों की नजर में दुनिया की जिन्दगी आरास्ता की गँध और (गरीब) मुसलमानों की मजाक उठाते हैं और तक्वा वाले लोग कियामत के दिन उन से उपर (बुलन्द मकामो मर्तबे) में होंगे और जुदा तआला जिसे चाहे वे हिसाब अता इरमाअे.

काफ़िर हमेशा दुन्यवी ने'मतों की कद्र करते हैं और उसी पर मरते हैं और भिस्कीन परहेजगार मुसलमानों की दुन्यवी डालत देभ कर उन की मजाक उठाते हैं. जैसा के दौरे नबवी में भी मालदार कुङ्कारे कुरैश डजरते अब्दुल्लाह एब्ने मसउिद, डजरते अम्मार एब्ने यासिर, सुहैब इमी, डजरते बिलाल عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को देभ कर इसते थे और अपना सर गुडर व तकब्बुर से उँया रभते थे. अल्लाह की पनाह

दौलते दुन्या हकीर है (कुरआन की अजमत)

कुरआने करीम पारह 14 सूरेअे हिज्ज आयत नं. 87/88 में है के

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْبَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۝ لَا تَدَّعِنَّ عَيْنُكَ إِلَىٰ مَا

مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

तर्जमा : और बेशक ! हम ने तुम्हें सात (7) आयतें दी जो दोहराई जाती हैं और अजमत वाला कुरआन दिया और अपनी आंभे षोल कर उस चीज को न देभो जो हम ने कुछ जोगो को भरतने के लिये दे रभा है और उन का कुछ गम न प्आओ और मुसलमानों को अपनी रहमत के दामन में ले लो.

उन सात आयतों से मुराद सूरअे फ़ातिहा है जो हर नमाज़ में हर रक़अत में दोहराई जाती है और उस के सिवा नमाज़ छोटी ही नहीं है. जिस की फ़ज़ीलतें बहुत हैं जिस का शुद्धात का आधा हिस्सा हम्दे बारी तआला है और बाकी का निस्फ़ मोमिनो की अपने रब से हुआ है इस के सामने काफ़ि़रों को जो हुन्यवी ने'मते दी गई है वोह हैय या'नी की अेक हम मा'भूली है. जैसा के सरवरे आलम, इफ़्रे मौजूदात, रलमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “वोह हम से नहीं जो कुरआन की बटौलत हर यीज़ से बे परवाल न हो जाअे.”

सूरअे फ़ातिहा की येह सात (7) आयते बनू कुरैज़ा और बनू नज़ीर के उन सात काफ़ि़लों से भी बेहतर है. जिस में अनवाओ अक्साम (तरह तरह के) कपणे, पुशू और जवाहिरात थे जिन्हें देभ कर मुसलमानों को येह भयाल आया के अगर येह माल हमारे पास होता तो हम उस माल से तक्वियत हासिल करते और उन को अल्लाह की राह में भर्य करते. तब अल्लाह तआला ने येह आयत नाज़िल इरमाई के अै महबूब ! तुम्हें सूरअे फ़ातिहा की जो सात (7) आयात अता इरमाई गई है वोह अपने इलानी, इमानी और इरफ़ानी, उभरवी फ़ाअेदे के पेशे नज़र उन सात (7) काफ़ि़लों से बेहतर है.

तो अै महबूब ! अपने मानने वालों से कह दो के अपनी आंभ उठा कर उन यीज़ों को रग़त (पसन्द करना) के साथ न देभे जो हम ने काफ़िर जोणो को उन के यन्द रोज़ा फ़ाअेदे के लिये दिया हुआ है तो उम्मते रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को याहिये के वोह कुइफ़ार के हुन्यवी साओ सामान की तरफ़ और अैशो तरभ की तरफ़ आंभें फ़ाण फ़ाण कर और रशक व हसरत से न देभे.

दुनिया से तस्करत

उत्तरते कुतैल बिन अयाज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते है के अगर उर लज़्जत मेरे लिये जाँझ कर दी जाअे तब ल्मी में दुनिया से ँतना डी नादिम रडूंगा जितना लोग मकडूड और डराम यीजों से नादिम रडते है और इरमाया : अल्लाड तआला ने डुराँयों के मजमूअे को दुनिया का नाम दे दिया है और दुनिया से सलामत लौटना ँतना डी मुश्किल है जितना दुनिया में आना आसान है और येड ल्मी इरमाया : दुनिया में जब किसी को ने'मतों से नवाजा जाता है तो आभिरत में उस के डिस्से कम कर दिये जाते है.

दुनिया की तरफ़ हैरत से न ँषो

दुनिया मोमिनों के लिये कैद खाना और काफ़िरों के लिये जन्नत है और काफ़िर ँसी पर शैदा रडता है दुनिया के लिये ज़ता है और उसी पर मरता है मगर मुसलमानों को याडिये के दुनिया की रंगीनियां और इरैब कारियां देख कर धोके में न आअे. ँसी भात को समजाने के लिये अल्लाड तआला पारड 16 सूरअे ताडा आयत नं. 131 में इरमाता है :

وَلَا تَبْدَنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ
لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۗ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝

तर्जमा : अै सुनने वाले ! अपनी आंखें उस तरफ़ न डैला ज़े ज़ती दुनिया की ताजगी डम ने काफ़िर ज़ेणो को रडने सडने के लिये दी हैं के उसी के सबब से डम ने उन को इत्ने में डाला और तेरे रब का रिज़क सब से अख़्श और डमेशा रडने वाला है.

यडूँे नसारा और मुश्रिको काफ़िर को अल्लाड तआला ने दुनिया का ज़े सामान दिया हैं उस की ज़ैबो जीनत उस की सज़ावट

(Decoration) की तरफ़ मोमिन हैरत से या लालच से न देखे क्यूंके येह उन की सन्ध रोज़ा राहत है. उरते हसन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : “नाइरमानों की शानो शौकत न देखो बल्के येह देखो के गुनाह की ज़िल्लत उन के गलो की तौक (बेणियां) बनी हुई है. येह उन के हक में ने'मत नहीं मगर वबाल है, बेशक ! वोह अल्लाह के गज़ब में पलटने वाले है.

सय्यिदुना हसन असरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का कौल है के अगर मुजे कोई शराब पीने के लिये बुलाअे तो मैं उस को ईस बात से बेहतर समजता हूं की मुजे कोई दुन्या तलबी के लिये बुलाअे. उरते अबू हाज़िम मक्की رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते है के दुन्या में कोई चीज़ ऐसी पैदा नहीं की गई है के जिस का अन्जाम हुज़नो मलाल (गम और अइसोस) न हो. और इरमाया : जो ईबादत गुज़ार दुन्या को पसन्ध करता हें उस को रोजे महशर भणा कर के क़िरिशते येह अे'लान करेगे के येह वोह शप्स हें के जिस ने अल्लाह तआला की नापसन्दीदा चीज़ को पसन्ध किया.

दुन्या लहवो लखब है

पारह 21 सूरअे अन्कभूत आयत नं. 64 में है के

وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوٌّ وَكَعِبٌ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَآخِرَةٌ لَآخِرَةٌ
الْحَيَاةُ الْمَوْجُوتَةُ لَآخِرَةٌ لَآخِرَةٌ ۝

तर्जमा : और येह दुन्या की जिन्दगी तो सिर्फ़ खेल कूद है और कुछ नहीं है और बेशक ! आभिरत का घर उरुर वोही सय्यी जिन्दगी है क्या ही अय्यो होता अगर जान लेते.

दुन्या का घर तो अस ऐसा ही हें जैसे बय्ये घणी त्मर खेल में टिल लगाते है और क़िर यल देते है अस येही हाल दुन्या का हें

मौत ईन्सान को दुन्या से जैसे जुदा कर देती है जैसे बच्चे खेलते खेलते मुन्तशिर हो जाते हैं।

जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये ખोल दिया

अल्लाह तआला अपने पाकीजा कलाम कुरआने करीम पारह 23 सूराओ जुमर आयत नं. 22 में ईरशाद इरमाता है :

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ ۗ

قَوْلٍ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبِهِم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ ۗ

तर्जमा : तो क्या वोह जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये ખोल दिया और वोह अपने रब की तरफ से नूर पर है वोह उस जैसा हो जाओगा जो पथर दिल् है ? तो ખराबी है उस के लिये जिन के दिल् याद खुदा की तरफ से सप्त हो गये।

हदीस शरीफ में है के जब येह आयत हुजूर नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तिलावत इरमाई तो सहाबा ने अर्ज किया : या रसूलल्लाह ! सीने का खुलना किस तरह से होता है ? और उस की अलामत या'नी निशानी क्या है ? सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : जब नूर कल्ब में दाखिल होता है तो वोह खुलता है और उस में वुस्अत होती है. सहाबा ने अर्ज किया : उस की क्या निशानी है ? इरमाया : दारुल गुदर या'नी दुन्या से दूर रहना और मौत के आने से पहले मौत की तय्यारी करना तो दुन्या से नईरत और मौत की तय्यारी येह दिल् में नूर पैदा होने की निशानी है।

दुन्या काईरों के लिये जन्नत है

अल्लाह तआला अपने पाकीजा कलाम कुरआने मज्द में पारह 25 सूराओ जुभरुफ आयत नं. 32 से 34 तक ईरशाद इरमाता है :

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَةَ رَبِّكَ طَنَحْنُ قَسْمًا بَيْنَهُمْ مَعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا
سُخْرِيًّا وَرَحْمَةُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ وَلَوْ لَا أَنْ يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً
وَاحِدَةً لَجَعَلْنَا لِمَنْ يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِيُؤْتِيَهُمْ سُقْفًا مِنْ فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ
عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ۝ وَلِيُؤْتِيَهُمْ آبَاءًا وَسُرْرًا عَلَيْهَا يُتَكَبَّرُونَ ۝ وَزُخْرَفًا
وَإِنْ كُلُّ ذَلِكُمْ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ۝

तर्जमा : क्या तुम्हारे रब की रहमत वोह (काफ़िर) बांटते

हैं हम ने उन में उन की जैबाईश (Beauty) का सामान, दुनियावी
जिन्दगी में बांटा और उन में अेक को दूसरे पर बणी बुलन्दी दी के
उन में अेक दूसरे को मजाक बनाये और येह के तुम्हारे रब की
रहमत उन्हों ने ज़ो जम्मा किया है उस से बेहतर है.

और अगर येह बात न होती के सब लोग अेक ही दीन
पर हो ज़ाये तो हम ज़रूर रहमान के मुन्किरों को छतना देते के उन
के लिये यांटी की छते और सीढीया बनाते के उीपर यढते और उन
के घरों के लिये यांटी के दरवाजे और यांटी के तप्त (बैठक) जिस
पर तकिया लगाते और तरह तरह की आराईश और येह सब
कुछ ज़ती दुनिया ही का अस्बाब है और आभिरत तुम्हारे रब के
नजदीक परहेजगारो के लिये है.

येह दुनिया की छिकारत का आलम तो येह है के तिरमिजी
शरीफ़ की हदीस में है के अगर येह दुनिया अद्लाह तआला के
नजदीक अेक मख़र की टांग के बराबर होती तब भी किसी काफ़िर
को उस में से अेक गिलास पानी भी न देता. दूसरी हदीस में है के
सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने याहने वालों की अेक

જમાઅત કે સાથ કહીં જા રહે થે કે રાસ્તે મેં એક મરી હુઈ બકરી નઝર આઈ આપ ને ફરમાયા : “ક્યા દેખતે હો ? ઈસ કે માલિક ને ઈસ કો બે કદરી સે ફેંક દિયા હૈ અલ્લાહ તઆલા કે નઝદીક ઈસ દુન્યા કી કદ્ર ઈતની ભી નહીં જિતની બકરી વાલે કે નઝદીક ઈસ બકરી કે મરે હુએ બચ્ચે કી હૈં. સરકાર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ફરમાયા : દુન્યા મુસલમાનોં કે લિયે કૈદ ખાના ઓર કાફિરોં કે લિયે જન્નત હૈ.

ન મિલને કી ખુશી ન જાને કા ગમ

અલ્લાહ તઆલા પારહ 27 સૂરએ હદીદ આયત નં. 23 મેં ફરમાતા હૈ :

لَيْكِلَا تَأْسُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ

તર્જમા : ગમ ન ખાઓ ઉસ પર જો હાથ સે નિકલ જાએ ઓર ખુશ ન હો ઉસ પર જો તુમ કો મિલે.

યેહ સમઝ લો કે અલ્લાહ તઆલા ને જો મુકરર ફરમાયા હૈ વોહ ઝરૂર હો કર હી રહતા હૈ ગમ કરને સે ગઈ હુઈ ચીઝ વાપસ ન મિલેગી ઓર ન ફના હુઈ ચીઝ દોબારા બન જાએગી. તો જો ચીઝ ફના હોને કે લાઈક હૈં વોહ મિલે તબ ભી ઈતરાને કે લાઈક નહીં હૈ, ચાહિયે તો યેહ કે ગમ કરને કી જગહ સબ્ર કરે ઓર ઈતરાને કી જગહ શુક કરે...બન્દા હમેશા અલ્લાહ તઆલા કી તરફ મુતવજજહ રહે ઓર ઉસ કી રિઝા કા તલબગાર રહે.

હઝરતે ઈમામ જા'ફર સાદિક رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હૈ : “એ ઈબને આદમ ! કિસી ચીઝ કે ચલે જાને પર ક્યૂં ગમ કરતા હૈ કે યેહ ગમ કરના ઉસ કો તેરે પાસ વાપસ ન લાએગા ઓર કિસી મૌજૂદ ચીઝ પર ક્યૂં ઈતરાતા હૈ કે મૌત એક દિન તુઝે ઉસ સે જુદા કર દેગી.

दुनिया से तड़रत

जब ईमाम ज़ा'फ़र सादिक رضي الله تعالى عنه ने दुनिया से किनारा कर लिया तो उठरते सुफ़ियान सौरी رضي الله تعالى عنه ने हाज़िरे भिदमत आ कर अर्ज़ की : या ईबने रसूलुल्लाह ! आप के दुनिया छोड़ने से मज़लूक आप के क़ैज़ से महज़ूम हो गਠ तो आप ने ज़वाब में दो शेर पढे, जिस का मा'ना है :

किसी जाने वाले ईन्सान की तरह वफ़ा भी यली गਠ और हया भी यली गਠ और लोग अपने अपने ज़यालात में गर्क रह गਠे. ब ज़ाहिर लोग अक दूसरे से ईज़हारे वफ़ा करते हैं मगर उन के हिल बिश्शुओ से लभरेज़ है.

दुनिया वालों से दुनिया मांगता

अक बुज़ुर्ग़ सय्यिदुना राबिआ बसरिया को अक भरतबा मा'भूली लिबास में देभा तो अर्ज़ किया : अल्लाह के अैसे बहुत से बन्दे है जो आप के अक ईशारे पर नफ़ीस लिबास मुहय्या करा सकते है. इरमाया : मुज़े गैर से मांगने में ईस लिये हया आती है के दुनिया का मालिक तो षुदा है और दुनिया वालों को हर यीज़ आरयतन (Temporary) दी गਠ है या'नी कुछ वक्त के लिये दी गਠ है और जिस के पास हर यीज़ आरयतन हो उस से कुछ सुवाल करना येह तो नदामत का सबब है.

आप इरमाया करती थी के अै अल्लाह ! मेरे हिससे की दुनिया तेरे दुश्मनों को दे दे और मेरे हिससे की आभिरत अपने दोस्तों को दे दे मेरे लिये तो तू ही काफ़ी है येह आप के मुबारक अल्फ़ाज़ रहे. अद-दुनिया लकुम, वल उक़्बा लकुम, मौला लि या'नी दुनिया तुम्हारे लिये और आभिरत तुम्हारे लिये मेरे लिये तो बस मौला.

વેસે હી એક મરતબા સચ્ચિદુના અબ્દુલ્લાહ ઇબને ઉમર
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا سے ખલીફા હારૂન રશીદ ને કહા કે મેરે સે કુછ માંગો
 આપ ને ફરમાયા : “મੈਂ તુઝ સે ક્યા માંગૂ ? દુન્યા માંગૂ યા આખિરત.
 તો ઉસ ને જવાબ દિયા કે : “દુન્યા હી માંગ લો. આખિરત તો મેરે
 ઇખ્તિયાર મેં નહીં હૈ. “તો હઝરત ને જવાબ દિયા : “દુન્યા તો મેં
 ને ઉસ કે અસ્લી માલિક સે ભી કભી નહીં માંગી તો તુઝ સે ક્યા
 માંગૂ ?

યા'ની યેહ દુન્યા ઇસ લાઈક હી નહીં હૈ કે ઉસ કો તલબ
 કરને કે લિયે ઝબાન કો હરકત દી જાએ. سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ક્યા પાકીઝા
 ખયાલાત વ અખ્લાક થે હમારે અસ્લાફ કે.

મોમિન કી નિચ્ચત હમેશા આખિરત હો દુન્યા નહીં.
 હમ સિફ રિઝાએ મૌલા કે લિયે આ'માલ કરે.



મોહસિને આઝમ મિશન કી જાનિબ સે શૈખ સા'દી
 رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ કી લિખી હુઈ કિતાબ ગુલિસ્તા વ બોસ્તાને સા'દી
 ગુજરાતી (ભાષાંતર) મેં છપ ચુકી હૈ ઓર બહુત જલ્દ મૌલાના
 રૂમ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ કી કિતાબ હિકાયતે રૂમી ગુજરાતી (ભાષાંતર)
 ઓર તફસીરે અશરફી પારહ 18 ગુજરાતી (લીપિયાંતર) છપને
 વાલી હૈ આપ અપને મહૂમીન કે ઇસાલે સવાબ કે લિએ. ડોનેશન
 દેને કે લિએ મોહસિને આઝમ મિશન સે કોન્ટેક્ટ કરેં.

મિશન H/O સેન્ટ્રલ કમ્પેટી બેંક ડિટેલ :

IDFC FIRST BANK : MOHSINE AZAM MISSION

AC NO : 100 8831 2174

IFSC CODE : IDFB 0040309

કિતાબ “નિચ્ચતુલ મોમિન” કી છપાઇ મેં મદદ કરતે
વાલે ડોતર કે તામ

- 01) મોહસિને આઝમ મિશન, પાલેજ
- 02) “ ” વાંકાનેર
- 03) “ ” મોડાસા
- 04) “ ” સરખેજ
- 05) “ ” સુરત
- 06) “ ” સુરેનદ્ર નગર
- 07) “ ” ડભોઈ
- 08) “ ” વિરમગામ
- 09) “ ” પ્રાતીજ
- 10) શૈખ મુઝકિર અલી (પેટલાદ)
- 11) પઠાણ ઈરફાનુલ્લાહ ખાન (બોરસદ)
- 12) હાજી સિદ્દીક ભાઈ ચોકસી (બોરસદ)
- 13) એડવોકેટ મુશ્તાક ભાઈ (ધોલકા)
- 14) હાજી અબ્દુરરઝાક મિલન (પેકેજિંગ)
- 15) અબ્દુલગની ભાઈ ડોઈ (હિમ્મતનગર)
- 16) મહૂમ વૈદ રસૂલ ભાઈ મૂસા ભાઈ (માંડલ)
- 17) મહૂમા ” મરીયમ બેન રસૂલ ભાઈ (”)
- 18) મહૂમ ” અબ્દુલ ગની રસૂલ ભાઈ (”)
- 19) ” ” હુસૈન મીયાં મૂસા મીયાં (”)
- 20) મહૂમા ” બીબી બેન હુસૈન મીયાં (”)
- 21) મહૂમ ” ફરીદ ભાઈ હુસૈન ભાઈ સાલાર (”)
- 22) ” ” મહંમદ ઈસ્માઈલ હુસૈન ભાઈ (કડી)
- 23) ” ” યાકૂબ સિદ્દીક હુસૈન ભાઈ (સરખેજ)
- 24) ” ” શબ્બીર એહમદ હુસૈન ભાઈ (”)
- 25) મહૂમા ” જુલેખા બાનુ રફીક ભાઈ (”)
- 26) મહૂમ ” મંડલી આદમ ભાઈ ઈસબ ભાઈ (ધાગધા)
- 27) મહૂમા ” બીબી બેન આદમ ભાઈ (”)
- 28) મહૂમ અબ્દુલ કાદર શૈખ
- 29) મહૂમા રુસ્તમ બીબી શૈખ
- 30) મહૂમ ગુલામ કાદર ગુલામ દસ્તગીર